International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 14 Issue 3, May-June, 2026

आचार्य रमानाथ झाक 'प्रबंध-संग्रह' क समीक्षा

अन्नु कुमारी

NET, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना।

सार

आचार्य रमानाथ झा शान्त, सौम्य ओ गम्भीर व्यक्तित्वक धनी छलाह। ई हँसवृतिक आलोचक आ मैथिली साहित्य सरोवरक 'हँस' छथि। हिनक जन्म 21 सितम्बर 1906 ई. कैं भेल छलनि। हिनक पैतृक दरभंगा जिलाक धर्मपुर छलनि। पं. तंत्रनाथ झा हिनक अनुज छलथिन्हि। ओ पटना विश्वविद्यालय सँ 1930 ई. मे अंग्रेजीमे एम. ए. कयलनि। सन 1933 ई. मे कानूनक परीक्षामे सेहो उत्तीर्ण भेलाह। ओ 1930 सँ 1936 धरि मधेपुर हाईस्कूलक हेडमास्टरक पद पर काज कयलनि। 1936 ई. मे दरभंगा राज लाइब्रेरीक पुस्तकालयाध्यक्ष नियुक्त भेलाह। ओहि पद पर रहि हुनका अध्ययन करबाक प्रचुर अवसर भेटलनि। 1952 सँ 1962 ई. धरि चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे अंगरेजीक प्राध्यापकक पदपर रहलाह तथा 1962 ई. मे तत्कालीन बिहार विश्वविद्यालयमे मैथिलीमे स्नातकोत्तर अध्ययन आरम्भ भेलापर ओ मैथिली विभागक रीडर आ अध्यक्ष बनाओल गेलाह। 1965 ई. मे दिल्लीक साहित्य अकादमीक मैथिलीक प्रतिनिधि ओ ओकर कार्यकारिणीक सदस्य निर्वाचित भेलाह, जाहि पद पर 9 दिसम्बर, 1971 ई. धरि, जहिया ओ दिवांगत भेलाह, पदासीन रहलाह।

परिचय

पाँच टा शोध-प्रबंधक संग्रहक लेखक छथि मैथिली साहित्यमे हँसवृत्ति समीक्षाक हेतु प्रख्यात आचार्य रमानाथ झा। 1965 ई. मे साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिली कैं मान्यता भेटला पर आचार्य ओकर प्रतिनिधि निर्वाचित भेलाह। मिथिला मे पत्र-पत्रिकाक प्रकाशन भेला सँ गद्य लेखनक परम्परा विकसित भेल। आचार्यक मुख्यतः गद्यकारक रूपमे मैथिलीक सेवा अतुलनीय अछि। भाषाक क्षेत्रमे अनुशासन लयबाक हेतु हिनका द्वारा कयल गेल सभसँ महत्वपूर्ण काज भेल शैलीक निर्धारण। आचार्य चाहैत छलाह जे लोक गद्य लिखब सिखथि एवं भाषाक स्वरूप कैं विशृंखल होयबा सँ बचाबथि। मैथिली भाषा साहित्यक विकासक हेतु ओ 'मैथिली साहित्य पत्र' नामक पत्रिकाक सम्पादन कयलनि जाहिमे मैथिलीक अमूल्य ग्रंथक प्रकाशन भेल। आचार्य रमानाथ झाक समीक्षा संबंधी विषयक अवधारणाक परिचय हुनक 'समीक्षा वृत्ति' नामक निबंध मे भेटैत अछि। एहि निबंध द्वारा आचार्य समीक्षाक स्वरूप, ओकर प्रकार गुण-दोष आदिक विश्लेषण कयलनि अछि। मैथिली साहित्यमे एखनहुँ धरि एहि प्रकारक समीक्षा विषयक दोसर निबंध नहि उपलब्ध अछि। प्राचीन गीत संग्रहक समीक्षा आचार्य भारतीय काव्यशास्त्रक अनुसरण करैत कयलनि आ साहित्यक विभिन्न विधा कथा, उपन्यास आदिक समीक्षा पाश्चात्य प्रणालीक अनुसरण करैत आचार्यक बहुआयामी, व्यक्तित्त्व आ समीक्षकक सभटा गुण 'प्रबंध-संग्रह' मे एकेठाम देखबा मे अबैत अछि। प्रबंध-संग्रह पाँच टा गवेषणापूर्ण शोध-प्रबन्धक संग्रह थिक जकर प्रकाशन 1963 ई. मे भेल। श्यामनन्दन सहाय व्याख्यानमालाक रूपमे पांचो वैहएटा विषय अछि जे ओहि समयधरि स्पष्ट नहि छल वा जाहि प्रसंग मे मतभेद छल। एहि सभ निबन्धक माध्यमसँ अपन अकाट्य तर्क आ प्रमाण द्वारा आचार्य इतिहासक पाँच टा अध्याय पर अपन मत प्रकट कयने छथि। बहुतो दिनक अध्यवसायक आ पंजी शास्त्रक अनुशीलनक कारणें आचार्य कैं मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक प्रति एकटा दृढ़ मत भऽ गेल छनि। पंजीशास्त्रक मनोयोगपूर्ण अध्ययन अनुशीलनहिक ई परिणाम थिक जे हिनक पांचो अनुसंधानपूर्वक रचना प्रमाणिक अछि। ई पांचो निबंध अछि- (i) प्राचीन मैथिली साहित्यक रूपरेखा (ii) मैथिली नाटक (iii) विद्यापतिक शिवसिंह (iv) गोविन्ददास झा (v) कवीश्वर चन्दा झा।

प्राचीन मैथिली साहित्यक रूपरेखा' निबंधक माध्यमसँ आचार्य रमानाथ झा मैथिली साहित्यक साहित्य, भाषा एवं लिपिक प्राचीनता पर विचार कयने छथि। निबंधक उद्देश्य प्रकट करैत आचार्य कहैत छथि मैथिली साहित्याकाश मे विद्यापति सत्ये तीव्र तिग्मांशुक सदृश देदीप्यमान छथि जनिक प्रखर काव्य प्रतिभाक तेज मे अन्यान्य हुनक पूर्ववती, समकालीन आ कतहुँ-कतहुँ परवर्ती कवि लोकनिक कृति सेहो ग्रह नक्षत्र जकाँ विलीन भए गेल। एहि साहित्यक प्रभात भनहि विद्यापतिक उदय सँ भेल हो, एकर अरुणोदय भनहि वर्णरत्नाकरक निबंध सँ भेल, परन्तु ताहि सँ पूर्वहुँ एहि साहित्यक एकगोट दीर्घव्यापी युग छल जकरा हमरा लोकनि विस्मृतिक अंधकार मे डूबल रातिक आख्या दऽ दैत छिऐक। परन्तु एहू रातिमे कतेक छोट पैघ ज्योतिषमान नक्षत्र उदित रहलाह अछि जनिक क्षीण आलोक ओहि अन्धकार कैं चीरि-चीरि हमरा लोकनि

कैँ उपलब्ध होइत अछि। ओहि विस्मृत युगक रश्मिकैँ ताकि–ताकि कैँ चीन्हब आ चीन्हि–चीन्हि मैथिली साहित्यक जिज्ञासु प्रेमी कैँ चिन्हाएब हमरा एतए लक्ष्य थिक। जाहि सँ जे भ्रम छल, ओ दूरि भऽ सकैक।

एहि निबंधक माध्यम सँ आचार्य ज्योतिरीश्वर सँ पूर्वक मैथिली साहित्यक जे रूपरेखा प्रस्तुत कयल अछि से हिनक इतिहास बोध, विलक्षण विश्लेषण क्षमता ओ साहित्यक मर्म कैँ बुझएबाक शक्तिक परिचय दैत अछि। मैथिली भाषाक प्राचीनताक संबंध मे आचार्य अशोक वाटिका मे भेल हनुमान–सीता वार्तालापक उदाहरण दैत छथि। बहुभाषाविद हनुमान जी सीता सँ मानुषी भाषा मे गप्प कयलनि। आचार्य रमानाथ झाक अनुसारैँ ओहि समयमे दूटा भाषा अवश्य छल प्रथम संस्कृत जे द्विजाति बजैत छल आ दोसर मानुषी जे सामान्य जनक भाषा छल। आचार्यक अनुसारैँ हनुमानजी सीताजी सँ हुनकर नैहरक भाषा मानुषी भाषामे गप्प कयलनि आ इयह भाषा मिथिला भाषाक अस्तित्वक प्रथम साक्ष्य थिक। मिथिला भाषा अस्तित्वक दोसर साक्ष्य हुनका बुद्ध आ महावीरक वचन मे भेटैत छनि। संस्कृत भाषा वर्गीय भऽ गेल छल तैँ ओ लोकनि अपन धर्मक प्रचारार्थ जनभाषा कैँ माध्यम बनौलनि। बुद्ध वचन सभ पालि भाषाक रूपमे विख्यात अछि ओहि प्रकारैँ जैन लोकनिक आदि ग्रंथक भाषा अर्द्धमागधी कहबैत अछि। कोसल, मगध आ विदेह तीनू जनपद परस्पर एक दोसरा सँ सम्पर्कित छल एवं तीनू भाषा मे भेद रहलो उत्तर साम्य अधिक छल। महावीरक मूलवचन अर्द्धमागधी मे हमरा लोकनि कैँ मैथिलीक प्राचीन रूप भेटैत अछि। पालि बौद्धधर्मक साहित्यिक भाषा भए संसार मे पसरि गेल, अर्द्ध मागधी जैन लोकनिक धार्मिक भाषा भए रहि गेल मुदा जनपदीय भाषा परिस्थितिक नवीनताक कारणें क्रमशः नव–नव प्रभाव सँ नवशैली मे, नव रीतिसँ नवीन रूप धारण करैत आधुनिक भाषाक दिशामे अग्रसर भेल। ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर मे ८४ टा सिद्धक उल्लेख अछि जाहिमे कतेको सिद्धक भाषा आ विषय मिथिला सँ सम्बद्ध अछि। जेना मिथिला मे अक्षरारम्भ सिद्धिरस्तु सँ होइत अछि तहिना सरहपाद अपन दोहामे सिद्धिरस्तुक प्रयोग कयने छथि। सिद्धाचार्य द्वारा प्रयुक्त लोकोक्ति मे सेहो मैथिल संस्कृतिक पुट अछि। एहि निबंधक माध्यम सँ आचार्य एहि भ्रांतिक निराकरणक प्रयास कयने छथि जे मैथिली ब्राह्मणक साहित्य थिक। एहि भाषा मे जे कोनो प्राचीन रचना उपलब्ध होइत अछि ताहि मे अधिकांश द्विजेत्तर जातिक रचना थिक जेना सिद्ध साहित्य आ डाक वचन। डाक ज्योतिष छलाह आ कृषि ओ यात्रा संबंधी अपन विचार प्रकट कयने छथि जे मैथिली साहित्यमे प्राचीन सामग्रीक अन्तर्गत अबैत अछि। एहिमे डाकक अनेक वचन प्रमाण रूपैँ उद्धृत अछि। यथा, राशिस्वभावतिचारमे –

"मेष मीन तिअ दण्डा दीस।
ता उप्परि दिअ पल अठतीस।।
वृष कुम्भा चौदण्डा मान।
पल एगारह भृग तिस मान।।"[1]

सरहपाद अपन दोहामे सिद्धिरस्तुक प्रयोग कयने छथि से देखल जाय –

"सिद्धिरत्थु मइ पढ़मे पढ़िअउ ।
मण्ड पिबन्तैँ विसरअ एमइउ ।।"[2]

तहिना कुक्कुरीपादक एकटा पद अछि–

"दिवसइ बहुड़ी कागडरैँ भाअ ।
राति भइले कामरू जाअ ।।"[3]

प्रबंध संग्रहक दोसर निबंध थिक 'मैथिली नाटक' एहि निबंध मे आचार्य अपन अकाट्य तर्क द्वारा कीर्त्तनिञा नाटक कैँ नाच सिद्ध कयने छथि। डॉ. जयकान्त मिश्र मध्यकालीन मैथिली नाटक कैँ कीर्त्तनिञा नाटक कहने छथि मुदा आचार्य जाहि नाटक मे कथोपकथन संस्कृत प्राकृत आ गीत मैथिली मे हो तकरा मैथिली नाटक कहब अनुचित मानलनि। आचार्यक अनुसार कीर्त्तनिञा नाटकक कल्पना उपलब्ध प्रमाणक ततेक विरूद्ध अछि जे ओहि मे ककरो आपत्ति होएत तकर हमरा संदेहो नहि अछि। नाटक थिक दृश्यकाव्य ओ सब काव्य जकाँ नाटको मे कथावस्तु रहैत अछि आ से कथा नाटक मे परस्पर कथोपकथन द्वारा पात्रक क्रिया द्वारा प्रदर्शित होइत अछि। अतएव अमुक नाटक कोन भाषाक थिक, एकर निर्णायक ओहि नाटकक कथोपकथनक भाषा थिक। अतएव जाहि नाटक मे कथोपकथन संस्कृत प्राकृत ओ गीत मैथिली मे हो तकरा मैथिलीक नाटक कोना कहि सकैत छी? उदाहरणस्वरूप कालिदासक विक्रमोवर्शीय मे संस्कृत आ प्राकृत तैँ अछिए, चारिम अंकमे एहि दुहू सँ भिन्न अपभ्रंश सेहो अछि, परन्तु तैँ की विक्रमोवर्शीय कैँ अपभ्रंश नाटक कहल जाएत अथवा से कहब संगत होएत? दोसर बात नाटक मे आंगिक, वाचिक, आहार्य–तथा सात्विक चारू प्रकारक अभिनयक आवश्यकता होइत छैक, मुदा डॉ. जयकान्त मिश्र जकरा कीर्त्तनिञा नाटक कहैत छथि तकरा मे एकर अभाव अछि। मिथिला मे त्रैभासिक नाटकक परम्परा बड़ प्राचीन अछि। दोसर हिनक तर्क छनि जे मिथिला मे नाटकक परम्परा रहैत तैँ ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकर मे तकर उल्लेख रहैत । तैँ मिथिलाक त्रैभासिक नाटक कैँ मैथिली नाटक कहब आग्रह मात्र थिक।

प्रबंध संग्रहक तेसर निबंध अछि 'विद्यापतिक शिवसिंह'। एहि निबंधक अन्तर्गत आचार्य शिवसिंहक विषयमे अनेको अज्ञात तथ्यक सप्रमाण उल्लेख कयने छथि। महाकवि विद्यापति महाराज शिवसिंहक बालसखा, अन्तरंग मित्र, विश्वस्त सचिव,

राजपण्डित एवं विशिष्ट राजनयिक छलाह। राजा शिवसिंह विद्यापति कैं जे किछु देलथिन्ह से अनित्य छल, नष्ट भए गेल मुदा महाकवि अपन पदावली आ अन्य रचनामे हुनकर उल्लेख कए हुनका अजर–अमर बना देलनि। राजा शिवसिंह आ हुनक रानी लखिमाक प्रसंगें विद्यापतिक दृष्टिकोणक उल्लेख करैत आचार्य कहैत छथि– हमरा तँ यैहए प्रतीत होइत अछि जे विद्यापतिक कृष्ण ओ राधाक रूप ओ लीलाक ब्याजें शिवसिंह ओ लखिमाक रूप ओ लीलाक वर्णन कएने छथि। विद्यापतिक कान्ह थिकथिन्ह शिवसिंह ओ राधा थिकथिन्ह लखिमा। महाकवि अपन पदावलीक भनिताक माध्यम सँ शिवसिंहक छओ पत्नीक उल्लेख, तिथिक उल्लेखक संग हिनक पिताक मृत्यु ओ हिनक सिंहासनाधिरोहणक वर्णन कयने छथि। महाराजा शिव सिंह कृष्णक समान 'सामर वदन' छलाह। ओहने रसिक तथा अभिनव नागर छलाह, जेहन कृष्ण छला, तँ विद्यापति कतेको ठाम अपन भनितामे कहैत छथि जे–

– "राजा शिवसिंह रूपनारायण साम सुन्दर काय ।"
– "अभिनव जकर रूपैं मुरारि ।"
– "कान्हरूप सिरि सिवसिंह आदि ।"[4]

एहि प्रकार सँ विद्यापति शिवसिंहकैं कृष्णक अवतार मानैत छलाह। शौर्यमे, वीर्यमे, चातुर्यमे, सौन्दर्यमे, वर्णमे, रसिकतामे, कामिनीमनोमोहकतामे, कामकेलिप्रवणतामे, शृंगारिकातामे अनेकधा, विद्यापति दुहुक समता प्रदर्शित कएने छथि। विद्यापतिक शिवसिंह वस्तुतः रूपनारायण छलाह तथा विद्यापति हुनका नर–रूपमे नहि, नारायण रूपमे प्रत्यक्ष–देव मानैत छलाह, प्रत्यक्ष देव आनन्दकन्द कृष्णक एकादश अवतार कहि हुनका अमर कए गेल छथि। शिवसिंह बड़ प्रतापी राजा भेलाह। मिथिलामे एकटा कहबी छैक जे –

"पोखरि रजोखरि आर सब पोखरा।
राजा शिवैसिंह आर सब छोकरा ।।"[5]

प्रबंध संग्रहक चारिम निबंध थिक 'गोविन्ददास झा' एहि निबंध मे आचार्य गोविन्द दासक परिचय एवं हुनक काव्य वैशिष्टयक वर्णन अति विद्वतापूर्ण कयने छथि आ हिनक समय सोलहम शताब्दीक उत्तरार्द्ध सँ सतरहम शताब्दीक चारिम दशक धरि मानैत छथि। गोविन्द दास नैयायिक छलाह आ नव्य न्यायक अध्ययन लेल नवद्वीप गेल छलाह। नवद्वीप चैतन्य महाप्रभुक भूमि छलनि आ विद्यापतिक गीत ओतय बड़ लोकप्रिय छल। गोविन्द दास विद्यापति सँ प्रभावित भऽ कीर्त्तन मंडलीक लेल गीतक रचना कयलनि। ई श्रुतिमाधुर्यक लेल मधुर रसमे कविता रचल। ई शब्द विन्यासी कवि छलाह। हिनक पद नारिकेर फल सदृश अछि। हिनक गीत मे प्रसाद गुणक अभाव अछि तँ मिथिलांचल मे विद्यापति गीत सदृश लोकप्रिय नहि भेल। हिनक पद बंगालक बैष्णव सम्प्रदायमे अत्यधिक प्रसिद्धि प्राप्त कएलक ओहिठामक बैष्णव सम्प्रदाय हिनक गीतकैं गबैत–गबैत मुच्छित भऽ जाइत छल जाहिमे ओहिठाम भक्त गुरु महाप्रभु चैतन्य अग्रणी रहैत छलाह। वस्तुतः गोविन्द दास भक्ति भावक अद्वितीय किछु कविक श्रेणीमे अबैत छथि। हिनक जे कोनो पद रचित भेल ताहिमे हिनका मूलतः राधा ओ कृष्ण, दिव्याति दिव्य, मनोहर, मनोरम मधुबर्णी, मनोभिलषित, मनमुदित, संचित भाव, मन मंदिरक अदभूते भेटैछ जे मंत्र मुग्ध कए दैछ। ई नवधा भक्ति द्वारा भगवान कृष्णकैं पूजैत छलाह –

"श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, बंदन, पादसेबन, दास।
ध्यान, पूजन, आत्म निवेदन, गोविन्द दास अभिलाष।।"[6]

एहि ग्रंथक पांचम निबन्ध थिक 'कवीश्वर चन्दा झा' आचार्य एहि निबंध मे कवीश्वरक प्रतिभा एवं हुनक अनुसंधानव्यसनक चर्चा कयने छथि। कवीश्वर एके संग संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वान, कवि, साधक अनुवादक, आलोचक, अनुसंधानक स्पष्टवादी आ निर्भीक व्यक्तित्वक स्वामी छलाह। कवीश्वर रामायणक रचना कए मैथिली साहित्य मे अमर भऽ गेल छथि मुदा हिनक अनुसंधानक रूपमे अवदान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अछि। मैथिली साहित्य मे हिनका सँ पैघ अनुसंधानकर्ता आइधरि केओ नहि भेल छथि। कवीश्वरक सम्पूर्ण जीवन मिथिला, मैथिली आ मैथिलक प्रसंग अनुसंधान करैत रहलाह। ओ नगेन्द्रनाथ गुप्तक संग विद्यापति पदक संग्रह कयलनि। गोविन्द दासक पदक प्रथम संकलनकर्त्ता वैहए थिकाह। छन्दक एहन ज्ञाता मैथिली साहित्य मे दोसर केओ नहि भेलाह। कवीश्वरक उपाधि हिनका खिधाँस (उपहास) मे भेटल रहनि मुदा अपन प्रतिभा सँ ई सत्य सिद्ध कयलनि। जे ओ कोनो भाँट या चाटुकारा या पिछलगु कवि नहि छथि, हुनक अपन योग्यता सभ तरहँ कविक श्रेष्ठ रूपमे छनि। पुरान कविलोकनिक कविता सब एकहि रंगक लगैत अछि भावमे, भाषामे, कल्पनामे, चमत्कारमे। कवीश्वर से मार्ग त्यागि अपन हृदयक चौमासक भास पर हिनक रचनाक चमत्कार अछि –

"भदइ सुखाएल धान दहाय
गरिब किसान कि करत उपाय
कोना दिन काटत
जिउत कि खाय
बालबचा मिलि करू हाथ हाय
हृदय जनु फाटत ।।"[7]

प्रो. हरिमोहन झाक आचार्यक संबंधमे निम्न कथन छैन्हि जे– **"रमानाथ बाबूक जेहने शालीनतापूर्ण व्यक्तित्व छैन्ह, तेहने सुरुचिपूर्ण कृतित्व छैन्हि। मंदाकिनीक धारा जकाँ निर्मल ओ पवित्र हुनक वाणी ओ लेखनी दुहूमे तेहन संयम छैन्ह जे एकोटा असंतुलित शब्द बहार भेनाइ असंभव। सत् साहित्यक ओ प्रतीक थिकाह।"**[8]

हिन्दी साहित्यक प्रख्यात साहित्यकार आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री रमानाथ झाक संबंधमे लिखैत छथि- **"मैथिली भाषा साहित्यक इतिहासमे पुनर्जागरणक युग अननिहार व्यक्ति लोकनिमे ई कोनो राजा राममोहन राय वा केशवचन्द्र सेनसँ कम नहि छथि।"[९]**

निष्कर्ष

प्रबंध-संग्रहक पाँचो निबंध आचार्य रमानाथ झाक गहन अध्ययनक संग-संग भाषाक प्रवाह, उपस्थापन शैलीक विशेषताक कारणेँ पाठकक ध्यान आकृष्ट करैत अछि आ ई रचना आचार्यक सर्वोत्कृष्ट कृति मानल जा सकैत अछि। प्रबंध-संग्रहमे आचार्य रमानाथ झाक प्रौढ़ चिन्तन, सूक्ष्म विश्लेषण, व्यापक अध्ययन, ओ अनुसंधान, आ आलोचनाक क्षेत्र मे एकटा आदर्श स्थापित करैत अछि।

संदर्भ सूची:-

(1) झा, श्री रमानाथ. प्रबंध-संग्रह. द्वितीय संस्करण, शेखर प्रकाशन,पटना, 2019, पृ०सं०-37.
(2) तथैव, पृ०सं०-36.
(3) तथैव, पृ०सं०-36.
(4) तथैव, पृ०सं०-74.
(5) तथैव, पृ०सं०-68.
(6) तथैव, पृ०सं०-82.
(7) तथैव, पृ०सं०-117.
(8) राउत, सुरेन्द्र. मैथिली भाषा आओर साहित्य. किरण प्रकाशन, दिल्ली, 2021, पृ०सं०-272.
(9) तथैव, पृ०सं०-272.